“पाटलिपुत्र”

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

भारतीय इतिहास में पाटलिपुत्र का विशिष्ट स्थान है| इस स्थल को सर्वाधिक लम्बी अवधि तक प्राचीन भारतीय राजनीति का केंद्र बने रहने का गौरव प्राप्त है| परम्पराओं के अनुसार पाटली नामक वृक्ष के कारण इस स्थल का नाम पाटलिपुत्र पड़ा| कथासरित्सागर के अनुसार ‘पुत्रक’ नामक ब्राह्मण और उसकी पत्नी पाटली के नाम पर इस स्थान का नाम पाटलिपुत्र हुआ| किन्तु इन दोनों कथानकों में कोई ऐतिहासिकता नहीं प्रतीत होती|

पाटलिपुत्र का सर्वप्रथम महात्म्य अजातशत्रु के शासन काल में स्थापित हुआ| वैशाली के लिच्छवियों के पराक्रम के कारण आजातशत्रु

को राजगृह के अतिरिक्त किसी सुरक्षित स्थान की आवश्यकता अनुभव हुई| गंगा, सोन, गण्डक और पुनपुन नदियों के आसपास बहने से जल यातायात पर भी उसका पूर्ण नियंत्रण हो सकता था| इस प्रकार आजातशत्रु के मंत्री वस्सकार द्वारा एक दुर्ग का निर्माण कराया गया| यधपि आजातशत्रु द्वारा यहाँ एक दुर्ग का निर्माण कराया गया किन्तु उसने अपना केंद्र राजगृह को ही बनाये रखा| जैन ग्रन्थ परिशिष्टिपर्वन के अनुसार उसके उत्तराधिकारी उदायी ने राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानान्तरित कर दी| जिसकी पुष्टि पुराणों से भी होती है| मेगस्थनीज के यात्रा विवरण में भी पाटलिपुत्र का विवरण मिलता हैं|

पाटलिपुत्र के प्राचीन स्वरूप को उद्दघाटित करने के लिए लोहानीपुर, बहादुरपुर, बुलन्दीबाग, कुम्रहार आदि का उत्खनन किया गया| इस स्थल का सर्वप्रथम उत्खनन 1912-14 इस्वी में डी०बी० स्पूनर द्वारा किया गया| इस उत्खनन द्वारा पाटलिपुत्र का अनेक स्तभों वाला सभा-मण्डप प्रकाश में आया| 1926-28 इस्वी में एम०घोस द्वारा बुलंदीबाग में उत्खनन करवाया गया| 1951 ई० में ए०एस० अल्तेकर के निर्देशन में कुम्रहार का उत्खनन हुआ| इन उत्खननों से महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए|

मौर्यकालीन स्तम्भयुक्त सभा मण्डप :- कुम्रहार के उत्खनन से अस्सी खम्भों वाले एक भवन के अवशेष प्रकाश में आए, जिसकी पहचान सभा भवन के रूप में की गई है| सभा मंडप में स्तंभों की आठ पंक्तियाँ है| प्रत्येक पंक्ति में 10-0 स्तम्भ थे| जिससे इनकी कुल संख्या 80 होती

है| स्तंभों की उचाई लगभग 32' है| इन पर पालिश की गई है| इस स्थल पर पाँच कालों के प्रमाण मिले है| प्रथम काल 150 ई०पू० से पहले का है| द्वितीय काल के अवशेषों के निचे रख की परत दिखाई देती है| साथ ही वृषभ अंकित कौशाम्बी के सिक्के, आहत एवं ढलवाँ सिक्के एवं शुंगकालीन मृदभांड प्राप्त हुए है| तृतीय काल में द्वितीय और तृतीय काल के प्रमाण एक साथ प्राप्त होते है| जिनकी विशेषता कुषाणकालीन मृदभांडो की प्राप्ति है| चतुर्थ काल में लेखयुक्त गुप्तकालीन मुहर और मृदभांड प्राप्त हुए है| यहाँ से प्राप्त साक्ष्यों से यह स्पस्ट है कि अग्निकाण्ड द्वारा नष्ट होने के बाद भी यहाँ निर्माण कार्य होता रहा| राख की अधिकता के कारण यह विचार किया जाता है कि इसका निर्माण भी काष्ट द्वारा ही किया गया था|

पारिखा एवं सुरक्षा-प्राचीर- मेगस्थनीज के अनुसार पुरे नगर को लकड़ी से भी घेरा गया था, जिसके अवशेष लोहानीपुर, बुलंदीबाग, बहादुरपुर, कुम्रहार आदि से प्राप्त हुए है| ये लकड़ी के खम्भे लगभग 12'-18' चौड़े तथा 18' ऊँचे थे| 1926-27 में बुलंदीबाग़ में हुए उत्खनन से काष्ठ-निर्मित सुरक्षा प्राचीर पर थोडा प्रकाश पड़ता है| यहाँ के सुरक्षा प्राचीर में 570 मीनारे थी| नगर लगभग $22^{1}/_{2}$ मील घेरे में था| मेगस्थनीज के अनुसार इसमें 64 तोरणद्वार थे| बुलंदीबाग से इस प्रकार के एक द्वार का प्रमाण मिला है जिसकी ऊचाई 13 फीट और चौड़ाई 15 फिट थी|

Fig.- 1 लकड़ी की संरचना, बुलंदीबाग़

अन्य महत्वपूर्ण अवशेषों में सड़के तथा नालियाँ, स्तूप, काष्ठ-चबूतरा, नहर, विहार, आरोग्य विहार, चैत्य, स्तम्भ, दीवार, शोष-गर्त एवं कुआ, चूल्हा, मृदभांड तथा अन्य अवशेष प्राप्त हुए हैं| आरोग्य-विहार उस विहार को कहा गया है जहाँ से 'श्री आरोग्यविहारे भिक्षुसंघस्य' लेखांकित मुहर छाप मिली है|